

Hindi (Hon) paper - VI

① अलंकार की परिभाषा एवं इसके भेद
 अलंकार आचार्य वामन के अनुसार जो किसी वस्तु को अलंकृत करे, वह अलंकार है। जिस प्रकार आभूषण स्वर्ण से बनते हैं उसी प्रकार अलंकार भी सुवर्ण (सुंदर वर्ण) से बनते हैं। संकीर्ण अर्थ में, काव्यशरीर, अर्थात् भाषा को शब्दार्थ से सुंदर तथा सुसज्जित बनाने वाले चमत्कारपूर्ण मनोरंजक ढंग को 'अलंकार' कहते हैं। अलंकार के मुख्यतः तीन वर्ग किये गये हैं —

(1) शब्दालंकार — शब्द के दो रूप हैं — ध्वनि और अर्थ। ध्वनि के आधार पर शब्दालंकार की सृष्टि होती है। इस अलंकार में वर्ण या शब्दों की लयात्मकता या संगीतात्मक गुण की प्रधानता रहती है।

(2) अर्थालंकार — अर्थ को चमत्कृत या अलंकृत करने वाले अलंकार 'अर्थालंकार' हैं। जिस शब्द से जो अर्थालंकार संचित है उस शब्द के स्थान पर दूसरा पदार्थ

रख देने पर भी वही अलंकार सद्योगा क्योंकि इस जाति के अलंकारों का संबंध शब्द से न होकर अर्थ से होता है। केशव ने कविप्रिया में दण्डी के आधार पर 35 अर्थ-लंकार गिनाये हैं। जसवंत सिंह ने भाषाभूषण में 102 अर्थलंकारों की चर्चा की है।

अर्थलंकार के अन्तर्गत मुख्य रूप से उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, उपमेयोपमा, दृष्टान्त आदि अलंकार आते हैं।

(11) उभयालंकार - जो अलंकार जो अलंकार शब्द और अर्थ दोनों पर आश्रित रहकर दोनों को चमकृत करते हैं, वे उभयालंकार कहलाते हैं।

वस्तुतः, संस्कृत के आचार्यों द्वारा किया गया अलंकारों का वर्गीकरण विवादास्पद रहा है। अलंकारों के वर्गीकरण का सर्वप्रथम प्रयोग रुद्रट ने किया। उन्होंने अलंकारों के चार भेद स्वीकार किये - (1) वास्तव (2) अपेक्ष्य (3) अतिशय और (4) श्लेष।